शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

वर्ष-१

अंक-८

माह-फरवरी२०१६

आओ हाथ से हाथ मिलाएं, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-८

माह-फरवरी २०१६

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ० अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन एवं मुख्यपृष्ठ

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

महेश प्रताप सिंह
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
महोबा

शुभकामना संदेश

शिक्षा क्या है? शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो संभावनाओं के द्वार खोलती है और यदि शिक्षा की ही संभावना मिट जाए तो संभावनाओं के द्वार कैसे खुलेंगे? कुछ ऐसी ही धारणाओं के तहत हर ग्राम में विद्यालय खोले गये क्योंकि ग्रामीण बच्चों में छिपी हुई है असीमित संभावनाएँ और वह संभावनाएँ देश के काम आएँ। इसके लिए जरूरी है उनका शिक्षित होना। गाँव शहर से बहुत-बहुत दूरी पर भी उपस्थित होते हैं। इन गाँवों में हमारे कर्मठ शिक्षक जाकर अपनी सेवाएँ देते हैं। ऐसी अनेक विपरीत परिस्थितियाँ उनके सामने होती हैं जिनका सामना करने के लिए जरूरत होती है कुछ नये हलों की, कुछ तकनीकों की। जो उनके तनाव को कम कर सके।

मुझे पता है कि मिशन शिक्षण संवाद इस संबंध में एक अहम भूमिका निभा रहा है प्रतिमाह मिशन शिक्षण संवाद की एक पत्रिका आ रही है जिसमें विभिन्न तकनीकों का उल्लेख किया जाता है। कुछ अनमोल रत्न की पोस्ट आती हैं जैसे अन्य शिक्षक सीख सकें कि विपरीत परिस्थितियों में भी न केवल काम किया जा सकता है बल्कि अच्छा काम भी किया जा सकता है। टीएलएम, नवाचार जैसे अनेक ऐसे स्तम्भ सम्मिलित हैं जिन्हें यदि अपनाया जाए तो बच्चों के समक्ष कुछ अच्छा प्रस्तुत किया जा सकता है।

मैं मिशन शिक्षण संवाद की इस पहल की बहुत सराहना करता हूँ साथ ही आशा करता हूँ कि मिशन शिक्षण संवाद की पत्रिका दिनोंदिन अधिक से अधिक लोगों के पास पहुँचे। फरवरी 2019 का यह अंक भी अन्य अंकों की भाँति सफल होने की कामना करता हूँ।

06.02.2019

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

हम अक्सर यह मान लेते हैं कि हमारी पहचान हमारे पद से है। हम शिक्षक हैं तो समाज में ऊँचा स्थान और सम्मान पाएँगे ही। यह सत्य है हम सम्मान पाते हैं। अगर आपको कोई ट्रैफिक हवलदार रोकता है और आप उससे कह देते हैं अथवा आप उसे बता दें कि आप शिक्षक हैं तो कई बार आपको बिना किसी जाँचे जाने देता है। उसे विश्वास है कि आप ईमानदार हैं और सम्मानजनक रूप से कार्य कर रहे होंगे। इस विश्वास को बनाए रखने के लिए हमें सक्रियता बनाये रखनी होगी। केवल एक बार विश्वास पा लेना ही सब कुछ नहीं होता बल्कि लगातार निभाना भी होता है।

आपको अपना सम्मान बचाये रखना है तो अपने विद्यार्थियों को अच्छे से अच्छा बनाने के बारे में सोचना होगा। आपको यह सोचना पड़ेगा कि विद्यार्थी भी आपके जैसा सम्मान पाने के योग्य बनें। इसके लिए आवश्यक है विद्यार्थियों का स्तर उठाना। उन्हें अच्छे से अच्छा पढ़ाना होगा, संस्कारों की समझ विकसित करना होगा और एक सफल नागरिक बनने की नींव को मजबूत करना होगा। जो आपके विश्वास और सम्मान को मजबूत बनाकर स्थायित्व प्रदान करेगा।

शिक्षण संवाद पत्रिका जब से आरम्भ की गयी है, उसका उद्देश्य भी यही ही है कि आप ही शिक्षकों द्वारा लिये गये शिक्षकोपयोगी विभिन्न स्तंभों के द्वारा, आप शिक्षकों को ही प्रेरित किया जा सके। एक व्यक्ति पूरी पत्रिका नहीं लिख सकता। उस पत्रिका में अनेकानेक स्तंभ होते हैं कोई किसी का विशेषज्ञ होता है तो कोई किसी का। एक–दूसरे से सब सीखते हैं। बाल कोना स्तम्भ लिखने वाला अनमोल रत्न से सीख सकता है तो अनमोल रत्न महिला शिक्षिका पर लेख से सीख सकता है।

प्रत्येक अंक की भाँति शिक्षण संवाद पत्रिका का यह अंक भी बहुत ही मेहनत से बनाया गया है। आशा है कि आप सभी को यह पसंद आएगा। कृपया अपनी राय मिशन के मेल पर अवश्य बताएँ।

धन्यवाद।

आपका

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	7
मिशन गीत	8
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	9–11
निन्दक नियरे राखिए	12–13
टी.एल.एम.संसार	14–16
नवाचार	17
गतिविधि	18
इंग्लिश मीडियम डायरी	19–20
प्रेरक–प्रसंग	21
सद्विचार	22
बाल फिल्म	23
बच्चों का कोन	24–25
शीर्षासन	26
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	27–28
माह का मिशन	29
अनमोल बाल रत्न	30
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	31
कस्तूरबा विशेष	32
योग विशेष	33
खेल विशेष	34–35
महत्वपूर्ण दिवस	36
शिक्षण तकनीकी	37
मिशन उपस्थिति	38

विचारशक्ति

शिक्षक : एक व्यापक व्यक्तित्व

–भारती शर्मा,

अखंड मंडला कारं व्याप्तं येन चराचरम !
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः !!

माँ से जीवन का प्रथम पाठ सीखकर.. भावनात्मक, स्नेहात्मक, वात्सल्य के आँचल से बाहर आकर जब एक नन्हा पुष्प विद्यालय में आता है तो उस नन्हें पुष्प की देखभाल कर और संवारकर एक खिला हुआ पुष्प बनाने की जिम्मेदारी उसके शिक्षकों की होती है। विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा (कक्षा 1–5) पूरी होने तक ही उसके अंदर पूरे जीवन के स्वरुप को निर्धारित करने वाले संस्काररूपी बीज रोपित हो जाते है। माता – पिता और परिवार चाहें किसी भी परिवेश के हों, अमीर हो या गरीब पढ़े लिखें हो या अनपढ़, पर अपने बालक को स्कूल मे भेजते समय उनकी आँखों में अपने बच्चे के लिए तरह–तरह के सपने पल रहे होते हैं। मन मे थोड़ी चिंता, साथ ही कुछ निश्चिंतता रहती है। अब शिक्षक उसकी जिम्मेदारी संभालता है। वह भी अपने नये छात्रों को जानने के लिए उतना ही उत्सुक रहता है। वह भी कल्पना करता है अपने छात्रों को विकास की पराकाष्ठा तक पहुँचाने की,, छात्रों के माध्यम से स्वयं को सफल करने की। पर इसी कल्पना को जब वास्तविकता के धरातल पर उतारा जाता है तो कठिनाइयों के पत्थर कल्पना का मार्ग अवरुद्ध कर देते हैं.... तब अध्यापक हार ना मानकर ढूँढ लेता है नवाचारों के मार्ग को, अब उसके मस्तिष्क मे नित नयी तकनीकें और नवाचार उपजने लगते है..... परन्तु भरसक प्रयास के बाद भी जब वह अपने लक्ष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर पाता तो थोड़ी निराशा स्वाभाविक है,, कभी स्वयं शिक्षार्थी बनकर अपने छात्रों के लिए नयी तकनीकों और शिक्षण विधियों की खोज करना,, कभी एक कुशल वक्ता बनकर अभिभावकों की शंकाओं का समाधान करना,, कभी माता समान बन छात्रों को स्नेह प्रदान करना,, कभी स्वयं आदर्श बन बच्चों मे नैतिकता का विकास करना..... यही है शिक्षक का व्यक्तित्व,, जो निरंतर केवल और केवल अपने छात्रों का विकास करने और अपने शिक्षण को सफल बनाने के प्रयास मे चलता रहता है,, चलता रहता है।

भोर हो गई है, सूरज निकल रहा है,,, अंधेरा कट रहा है, वक्त बदल रहा है !
मै तो उस मंजिल का राही हूँ,,, जो अपनी मंजिल की तलाश मे अनवरत चल रहा है !!!!

जय शिक्षक, जय भारत!

भारती शर्मा,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय देवबन्द देहात,
विकास खण्ड–देवबन्द,
जनपद–सहारनपुर(उ. प्र.)

मिशन गीत

मिशन मिशन मिशन,
हम हैं सिपाही इसके,
ये है हमारा मिशन।।

मिशन शिक्षण संवाद है,
सिपाहियों सा काम है,
मिशन इसका नाम है,
नहीं इसका कोई दाम है।
मिशन मिशन मिशन
हम हैं सिपाही इसके
ये है हमारा मिशन।।

डटकर करते मुकाबला,
शिक्षण जिसकी है कला,
सबके सहयोग से ये फला,
नवाचार जिसकी गोद में पला।
मिशन मिशन मिशन,
हम हैं सिपाही इसके,
ये है हमारा मिशन।।

गतिविधियों से सजी,
हर एक इसकी डोर है,
इसका न कोई ओर–छोर है,
हर नया दिन नई भोर है ।
मिशन मिशन मिशन,
हम हैं सिपाही इसके,
ये है हमारा मिशन।।

बच्चों की अठखेलियाँ
शिक्षकों की रैलियाँ
सभी का सहयोग बन,
मिशन मिशन मिशन,
हम हैं सिपाही इसके,
ये है हमारा मिशन।।

देता हमको भरपूर जानकारियाँ,
अनगिनत हैं इसकी कलाकारियाँ,
कला क्राफ्ट इसकी निशानियाँ,
इसकी तो हैं अनगिनत कहानियाँ ।
मिशन मिशन मिशन
हम हैं सिपाही इसके
ये है हमारा मिशन।।

सलाम इस मिशन को,
सलाम इस मिशन को,
मिशन को सादर नमन हो,
नाम चमकता बीच गगन हो।
मिशन मिशन मिशन
कीजिए अनुसरण.....

सबीना साहनी,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय घुराट,
विकास खण्ड– बंगरा,
जिला– झाँसी (उ.प्र.)

बेसिक शिक्षा
के
अनमोल रतन

संतोष जोशी,
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय
सूर्यागांव,
क्षेत्र–भीमताल, जिला – नैनीताल,
उत्तराखंड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/blog-post_80.html

नरेश चन्द्र शर्मा
प्रधानाध्यापक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय रहीमपुर
विकास क्षेत्र– फरह, जनपद– मथुरा

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/blog-post_52.html

अनिल कुमार बाथम (इं०प्र०अ०)
पूर्व माध्यमिक विद्यालय ढरकन,
वि०ख०–सहार, जनपद–औरैया

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/blog-post_94.html

राजेश तिवारी
कन्या पू०मा०वि० महुआ,
ब्लाक– महुआ, जनपद –बाँदा

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/blog-post_22.html

Shalini Kushwaha
Primary School Rasoolabad
Chayal Kaushambi

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/shalini-kushwaha-primary-school.html

इन्द्रावती सिंह,
प्राथमिक विद्यालय दाउदपुर,
नगर क्षेत्र–गोरखपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/blog-post_16.html

अंजु शर्मा (इ०प्र०अ०)
पूर्व माध्यमिक कन्या विद्यालय
फफूण्दा मेरठ

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/blog-post_9.html

राजेश कुमार उपाध्याय
प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय
बेलौना, बरसठी, जौनपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/blog-post_95.html

सुभाष पाण्डेय (प्रभारी अध्यापक)
पूर्व माध्यमिक विद्यालय रम्पुरा,
विकासखंड–शाहबाद, रामपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/01/blog-post_21.html

गुलशन जहां प्रधानाध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय कटरा मनेपुर
विकासखण्ड– भाग्यनगर, जनपद–औरैया

https://shikshansamvad.blogspot.com/2019/01/blog-post_19.html

निन्दक नियरे राखिए

क्या है शिक्षा क्रांति ..
व्यवस्था में जंग लग गई है तो कुछ नया सोचो ..
मेरी टेक्निक मेरी सोच

—डॉ0 मनोज कुमार वार्ष्णेय

Primary school की पढ़ाई आप सम्भाल लें (गणित कितना पढ़ाना है मैने बताया है .. इंग्लिश कितना पढ़ाना है वो भी बताया है ..20 तक पहाडा रटा दें ..बच्चे को मातृभाषा का विद्वान बनाने की कोशिश करें रोज एक कहानी सुनाएँ ..खूब प्रश्न करें ..पाँच साल मे 365×5 =1825 कहानियों का ज्ञान प्राप्त कर लेगा अगर आप चाहेंगे तो ..वो भी खेलते—खेलते ..क्या संभव है कि 5 कहानी ही ठीक से समझा दें इंग्लिश में या बच्चे के दिमाग मे ठीक से घुसा दें..हिंदी में 1825 कहानियाँ जान लेगा ..

कुछ फर्क नजर आ रह है ..?? एक तरफ 5 मुश्किल है ..दूसरी तरफ 1825--ये है मातृभाषा की शक्ति ..अभी तो स्कूल की पढ़ाई जोड़ा नहीं हूँ..

क्या होता है ज्ञान..अलग से कुछ नहीं होता .पहचानो अपनी ताकत.. मैं दूसरी कक्षा में उपन्यास पढ चुका था हिंदी मे होने के कारण..क्या ये इंग्लिश मे संभव है??

middle school की पढाई मैं सम्भाल लेता हूँ..दो—दो दिन मे खत्म होगा गणित और इंग्लिश.. कहाँ लगे हो भाई..खेलने दो बच्चों को ..

वो इंग्लिश दूँगा जिसे दुनिया ने आज तक देखा है न सुना है ..

दर्शन के साथ बच्चे गणित से खेलेंगे ..middle school में बच्चा इतना योग्य हो जाएगा कि हाईस्कूल की पढ़ाई खुद सम्भाल लेगा ..नहीं हुआ तो भिलाई भेज देना एक महीने मे दसवीं का कोर्स बहुत सारी संस्थाएँ पूरा करा देती हैं (कितने विकल्प चाहिए.. बिना शिक्षक के भी आप का काम रुका नहीं .. इसी बीच शिक्षकों को भी प्रशिक्षित कर दिया जाएगा ..

उच्च माध्यमिक के लिये गूगल बैठा है। कुछ कमी रह जाए तो आपके बचे हुए धन का कोई कोना खर्च कर देना..(शिक्षकों का आशीर्वाद अभी बाकी है ..कहाँ लगे हो पब्लिक स्कूल के चक्कर मे..पंछी को छाया नहीं फल लागे अति दूर)

आप10 CGPA चाहते हैं न..मेरे साथ आइये 10 CGPA भी मिलेगा साथ में sports में special achievements भी..बच्चे के आँखों से चश्मा हटेगा वो अलग ..किताबें भी स्कूल देगी.

. middle school तक पढ़ाई बहुत सरल है ..कठिन बनाकर पेश किया जा रहा ताकि व्यवसाय बन सके...

बच्चों का बचपन छीनने का अधिकार किसी को नहीं ..माता पिता को भी नहीं ..

Concept

The final punch

POSTMORTEM OF ENGLISH

Class 1--letters-

Class 2--words-

Class 3--verbs-
Class 4 --part of speech(definitions only)
Class 5--small sentences--
Class 6 Tense
Class 7 Voice
Class 8 applications----
class9-10---be the master
class11-12--kick the english---
Best way to learn english for the students of local medium--
————————————————————————

कैसी हो प्राथमिक शिक्षा ..(गणित)
Class one से five तक का गणित..
Class 1--counting and table. गिनती और पहाड़ा।
Class 2--addition and subtraction-जोड़ना घटाना।
Class3--multiplication and division.गुणा भाग।
Class4--fraction and decimal.भिन्न और दशमलव।
Class 5—LCM, HCF and Percentage-लघुत्तम, महत्तम और प्रतिशत।

आपclass–1 में कितना भी पढ़ा लें class–5 यहीं पर खत्म होगा। आप class–5का syllabus देख लें..
Nursery, class-1 class-2 में बहुत ज्यादा पढाई कराने के बाद भी english medium का बच्चा जब 8 साल पढ़कर class–5 पहुँचता है तब वो class–5 का maths ठीक से नहीं बना पाता लाखों रुपये खर्च करने के बाद भी..english खुद उसके लिये बोझ बन चुका होता है (nursery से class–5 आठ साल)...
इसके विपरीत हिंदी medium का बच्चा इसे खेलते–खेलते सिर्फ पाँच साल में बिना किसी खर्च के बना लेता है समर्पित शिक्षक मिल जाए तो चार साल में बना लेगा....
English medium का बच्चा भी तब समझता है जब हिंदी मे समझाया जाता है ....जब पाँच की जगह आठ साल के बाद भी बच्चा हिंदी मे ही समझेगा तो लाखों रुपये की बरबादी क्यों? उसके मासूम बचपन के साथ मजाक क्यों? ... बच्चों को बचपन जीने दें।
आँखें खोलिये जनाब मनोज बोल रहा हूँ.....
Save bachpan
Education First &
जयहिंद

डॉ0 मनोज कुमार वार्ष्णेय
प्रवक्ता
डाइट आगरा

न्यूटन डिस्क

न्यूटन डिस्क
कक्षा –8
विषय – विज्ञान
खेलो सीखो बनो महान ।
सरल, सुलभ बना विज्ञान ॥
विज्ञान जैसे रोचक विषय को छात्रों के स्तर तक लाकर उन्हें गतिविधियों के माध्यम से सक्रिय रुप से जोड़कर छात्रों को विज्ञान के तथ्यों का ज्ञान सरलतापूर्वक सरलतापूर्वक कराया जा सकता है। इन्हीं आसान और प्रभावी विचारों को ध्यान रखते हुये न्यूटन डिस्क के माध्यम से प्रकाश में सात रंगों के होने का ज्ञान प्रत्यक्ष रुप से 'करके देखें और सीखें' के माध्यम से कराया गया। न्यूटन डिस्क का निर्माण छात्रों द्वारा स्वयं अनुपयोगी सामग्री द्वारा किया गया।
आवश्यक सामग्री –
1– खराब सी.डी.
2– सफेद पेपर
3– रंग
4– धागे की रील की नलियाँ
5– नेल पेंट की शीशीयों के केप या पेन के कैप
6– फेवीकोल या फेविक्विक
निर्माण विधि –
सर्वप्रथम बेकार पड़ी सीडियों पर छात्र, छात्राओं ने फेवीकोल द्वारा गोल आकार का सफेद पेपर चिपकाया। जिसे VIBGYOR के अनुसार रंग प्रदान किये गये। इसके पश्चात छात्रों द्वारा सी. डी. के छिद्र में नेल पेंट की शीशी का कैप लगाया गया जिसका नुकीला और गोलाकार सिरा नीचे की और किया गया और ऊपर की ओर से धागे की रील की नली को नेल पेंट के केप में फँसाकर फेवीकोल या फेविक्विक द्वारा अच्छी तरह चिपका दिया गया। इस प्रकार न्यूटन डिस्क को चर्खी का रुप प्रदान किया गया। छात्रों द्वारा जब इसे चर्खी की तरह जमीन पर घुमाया गया तो सात रंगों की न्यूटन डिस्क का रंग सफेद हो गया।
शिक्षण अधिगम परिणाम –
इस प्रकार छात्रों ने खेल–खेल में रोचकता के साथ प्रकाश सात रंगों से मिलकर बना है अर्थात सफेद रंग के प्रकाश के स्पेक्ट्रम के रहस्य को जाना।

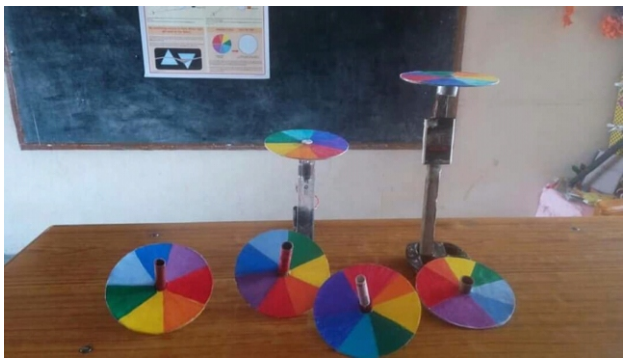

डॉ0 खुर्शीद हसन,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय हस्तिनापुर,
विकास खण्ड–बड़ागाँव,
जनपद–झाँसी।

Punctuation Tree

कक्षा– 7–8

विषय– अंग्रेजी

TLM विवरण

प्रायः देखा जाता है कि जब बच्चे अपनी कॉपी में कुछ लिखते हैं तो विराम चिन्ह (punctuation marks) को अनदेखा कर देते हैं। बच्चों का ध्यान इस ओर आकर्षित करने हेतु बच्चों की सहायता से मेरे द्वारा एक teaching learning material बनाया गया जिसका नाम Punctuation Tree दिया गया। Punctuation marks कई तरह के होते हैं जैसे: full stop, comma, question mark, exclamation mark, brackets इत्यादि।

आवश्यक सामग्री– रंगीन पेपर, फोम शीट, गम, स्केच पेन, कैंची।

बनाने की विधि–..... punctuation tree बनाने के लिए पहले रंगीन पेपर को चिड़ियों के आकार में काटकर स्केच पेन या मार्कर से उसकी out line कर लें और हर एक punctuation marks को अलग अलग कट किये हुए चिड़ियों के आकार वाले पेपर पर लिख लें। उसके बाद फोम शीट को क्रिसमस tree के आकार का काट लें और हर चिड़िया को उस ट्री पर चिपका दें।

साभार
शशिकला यादव,
सहायक अध्यापिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय करमैनी,
विकास खण्ड–पिपराइच,
जनपद–गोरखपुर

Our Environment TLM

Class-5
Subject -Our Environment
Topic-- Methods Of Food Preservation
◆Drying
◆Freezing
◆Boiling
◆Use of chemicals and other substances
◆Pasteurization
Material-- Card-Board, Coloured Chart Paper, Scissor,Fevicol,Tape,Marker, Sketch

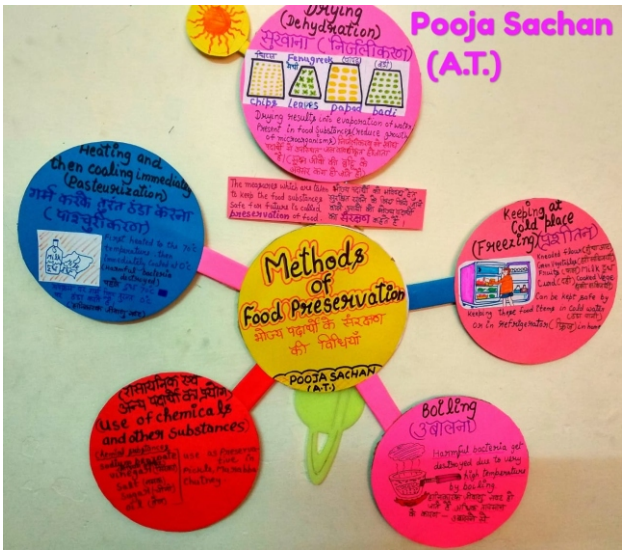

T.L.M. Made by
Pooja Sachan (A.T.)
EMPS Maseni
Team Mission Shikshan Samvad
Barhpur
Farrukhabad

Zero Investment नवाचार

—प्रवीण कुमार मिश्र

दैनिक उपस्थिति के दौरान विद्यार्थियों को खेल–खेल में संख्याओं का वर्ग व घन कंठस्थ कराना

प्रस्तावनाः–

थीम बेस उपस्थिति प्रक्रिया बनाकर वर्ग व घन याद कराना

कार्यविधि :–

हमने अपने विद्यालय में थीम आधारित उपस्थिति की शुरुआत की जिसमें बच्चे yes sir/ present sir के साथ–साथ अपना अनुक्रमांक संख्या का वर्ग व घन भी बोलेंगे।

पद 1

आरंभ में बच्चों को 1 से 20 तक की संख्या में वर्ग व घन श्यामपट्ट पर लिखवा दिया गया। तत्पश्चात उन्हें अपने अनुक्रमांक का वर्ग व घन याद करके बोलने के लिए प्रेरित किया गया।

उदाहरण :–

कक्षा 8 में

अनुक्रमांक 1 महिमा :–

महिमा ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराते समय yes sir के साथ–साथ 1 का वर्ग 1 एवं 1 का घन 1 भी बोला।

अनुक्रमांक 2 प्रीति

प्रीति ने भी उपस्थिति दर्ज कराते समय present sir के साथ–साथ 2 का वर्ग 4 एवं 2 का घन 8 भी बोला।

इसी प्रकार से पूर्ण उपस्थिति दर्ज कराने की प्रक्रिया का पालन किया गया एवं शेष कक्षा 6 एवं 7 में भी यही गतिविधि अपनायी गयी।

पद 2

कुछ दिन बाद विद्यार्थियों को अपने अनुक्रमांक के साथ–साथ अपने से आगे एवं पीछे की संख्या अनुक्रमांक का भी वर्ग व घन याद करने बोलने के लिए प्रेरित किया गया।

पद 3

क्रमशः बच्चों के अधिगम क्षमता का विस्तार करते हुए 1 से 20 तक का वर्ग व घन याद कराया गया।

निष्कर्ष –

इस शून्य निवेश नवाचार शैक्षिक गतिविधि से विद्यार्थियों ने खेल–खेल में संख्याओं का वर्ग व घन कंठस्थ कर लिया एवं उनमें आत्मविश्वास की वृद्धि हुई।

कुछ बच्चों ने स्वतः प्रयास करके 20 से बड़ी संख्याओं के वर्ग व घन को भी याद कर लिया। इससे उनकी अधिगम क्षमता में वृद्धि हुई।

प्रवीण कुमार मिश्र
सहायक अध्यापक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय बेलकुर,
विकास क्षेत्र–गगहा,
जनपद–गोरखपुर।

गतिविधि

गणित की गतिविधि

–वीरेन्द्र परनामी

मेरा मोबाइल न0 (4422322321)

मोबाइल न० की तरह 10 अंक याद करके हम 1 से 100 तक संख्याओं के बीच भाज्य और अभाज्य संख्याओं की अवधारणाओं को हल कर सकते हैं।

गतिविधि –
सर्वप्रथम 1 से 100 तक की संख्याओं को 10 –10 के समूह में लिखकर छलनी विधि से भाज्य– अभाज्य संख्याओं को छाँट लें।

छटी हुई अभाज्य संख्याओं को 10 के समूह(1–10, 11–20.....) से छाँटकर उनकी संख्या सामने लिखते जाएँ।

इस प्रकार 10 समूह में जो संख्याएँ प्राप्त होंगी उन्हें क्रमशः लिख लें।

जो 4422322321 संख्या प्राप्त होगी। इसी संख्या को छात्रों को याद कर दे। इस संख्या के याद होने के बाद छात्र सीख पाएंगे।

अधिगम –
1. छलनी विधि से भाज्य अभाज्य संख्याएँ निकलना
2. सह–अभाज्य
3. सबसे छोटी अभाज्य संख्या
4. 100 तक भाज्य–अभाज्य संख्याएँ
5. 1 से 10, 11 से 20, ... अलग–अलग भाज्य–अभाज्य संख्याओं को ज्ञात करना

गतिविधि का वीडियो देखने के लिए क्लिक करें–
https://youtu.be/TXUp4Hoy7Os

वीरेन्द्र परनामी
(उर्दू शिक्षक)
क०गां०आ०बा०वि०
विकास क्षेत्र– कुरारा
जनपद –हमीरपुर (उ०प्र०)

English Medium Diary

मनमानी G की

-Chhavi agrawal

Hello fellows!!

Here I'm Chhavi from Varanasi

yes you are right ! From the city belonging to Ganga-

जिसे अंग्रेजी में कहते हैं–

'GANGES'

मगर क्या कभी आपने इस शब्द में डुबकी लगाकर यह पता करने की कोशिश की है कि उसको गैंजिज क्यों बोलते हैं, गैंगिज क्यों नहीं?? आखिर हिंदी का शब्द तो गंगा है।

यदि हाँ तो आपको G के अलग–अलग उच्चारणों का clue मिल गया होगा, अगर नहीं तो आज मेरे साथ मिलकर पता लगाएँ।

G के मामले में भी उच्चारण का फार्मूला लगभग वही है जो C के मामले में है।

▶ With reference to my previous article from same magazine January edition

आऊAOU कहे तो गाऊँ एई EIY कहे तो जाऊँ

यानीA, O, U से पहले G का उच्चारण हार्ड यानी 'ग' होगा और E, I, Y से पहले G हो तो उसका उच्चारण सॉफ्ट यानि 'ज' होगा।

Ganges में पहले वाले G के बाद ं है इसलिए उसका उच्चारण गंगा वाला ग होगा लेकिन बाद वाले G के बाद म है इसलिए उसका उच्चारण जमुना वाला ज होगा।

इसी तरह के कुछ उदाहरण देखिए

जिनमेंG दो बार आया है और फॉर्मूले के हिसाब से दोनों बार उच्चारण अलग–अलग हैं।

Gadget (गैजेट)

Engage (इंगेज)

Gorgeous (गॉर्जियस)

Gigantic (जाइगैंटिक)

इसी तरह oblidge में G का उच्चारण ज है लेकिन obligation में ग हो जाता है।

काश कि सभी मामलों में ऐसा ही होता लेकिन ऐसा है नहीं a, o, uसे पहले G हो तो ग का funda तो फिर भी सही है लेकिन e,I, y से पहले G हमेशा 'ज' नही होता।

अपवाद भी इतने ज्यादा हैं कि कई बार सोचना पड़ता है इसे फॉर्मूला कहा भी जाए या नहीं जैसे gear, get, geyser, gift, girl, give– इन सबमें G के बाद e या i है मगर उच्चारण ग है।

लेकिन हम बावजूद इसके इस फॉर्मूले को मानेंगे क्योंकि शुरूआती G के मामले में भले ही यहाँ नियम टूट रहा है मगर जब शब्द के बीच में G है तो यह फॉर्मूला ज्यादातर मामलों में सही है ।

ANGEL एंजल

AGENT एजेंट
OXYGEN ऑक्सीजन
URGENT अर्जेंट
VIRGIN वर्जिन
ENGINE एंजिन
DIGIT डिजिट
MAGIC मैजिक
GINGER जिंजर
कुछ अपवाद इसमें भी हैं जैसे TARGET (टार्गेट), BEGIN (बिगिन) या फिर ER वाले मामले में जैसे HUNGER (हंगर), FINGER (फिंगर) etc-

G अंत मे हो तो 'ग', GE हो तो 'ज'
G के मामले में कुछ चीजें तय है जैसे G शब्द के अंत मे हो तो हमेशा 'ग' ही होता है। इसी तरह शब्द के अंत मे GE हो तो उसका उच्चारण 'ज' ही होता है। जैसे–
BUG (बग)
DRAG (ड्रैग)
DOG (डॉग)
MANAGE (मैनेज)
CAGE (केज)
HOMAGE (होमेज)
GY के मामले में भी स्थिति एकदम साफ है चाहें वह शुरू में हो या आखिर में उसका उच्चारण 'ज' ही होगा जैसे
Gymnasium (जिम्नेजियम)
Gypsum(जिप्सम)
Gymnastics (जिम्नास्टिक्स)
Biology (बायोलॉजी)
बसGynae (गाइनी) और इससे बनने वाले शब्दों को छोड़कर ।
Gका ऐसा गड़बड़जाला
कभी है गाला तो कभी ये जाला
रूल्स को समझो तो
उच्चारण झिंगालाला

Chhavi agrawal
Assistant Teacher
English Medium Primary School Banpurwan
Block Kashi Vidyapeeth
Varanasi

प्रेरक प्रसंग

सरोजिनी नायडू

शिक्षण संवाद

सरोजिनी नायडू भारत की एक प्रसिद्ध कवयित्री और भारत देश के सर्वोत्तम राष्ट्रीय नेताओं में से एक थीं।महिला सशक्तिकरण की लहर को शक्ति प्रदान करने वाली भारत कोकिला सरोजिनी नायडू ने भारतीय समाज में जातिवाद और लिंग भेद को मिटाने के लिए कई कार्य किए।
बात तब की है, जब कोलकाता में मुस्लिम महिला सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन था। सरोजिनी नायडू इसकी मुख्य अतिथि थीं। जब सरोजिनी नायडू वहाँ पहुँची, तब उन्होंने देखा कि वहाँ भाषा को लेकर बहस हो रही थी। कोई कह रहा था कि सभी को अपने विचार बांग्ला में देने चाहिए क्योंकि कोलकाता बंगालियों की भूमि है, तो कोई कह रहा था कि मुस्लिम महिलाओं का अधिवेशन होने के कारण सभी को अपने विचार उर्दू में रखने चाहिए। इस कारण भाषण देने वालों में कोई बांग्ला में तो कोई उर्दू में अपनी बात कह रहा था। उनके पास बैठी महिलाओं में भी किसी ने बांग्ला की वकालत की तो किसी ने उर्दू की। सरोजिनी नायडू को ये बात बिल्कुल भी अच्छी न लगी क्योंकि उनका मानना था कि अपने विचारों और भावनाओं को अपने अनुसार अभिव्यक्त करने की आजादी सभी को है।

इसी बीच एक स्वयंसेविका ने आकर किसी महिला से कहा, आपके घर से फोन आया है कि आपकी बच्ची बहुत रो रही है। किसी भी तरह चुप नहीं हो रही है। वह महिला बहुत परेशान हो उठीं, तभी सरोजिनी नायडू ने सेविका से कहा, बहन जरा फोन पर पूछ लो कि बच्ची बांग्ला में रो रही है या उर्दू में। उनकी बात सुनकर भाषाओं पर बहस कर रहीं महिलाओं का चेहरा शर्म से झुक गया। उन्होंने कहा कि कभी आपने दर्द की भाषा सुनी होती तो जानतीं, आप लोग भाषा को लेकर बहस न करतीं। सरोजिनी नायडू के ऐसा कहते ही सभी को समझ आ गया कि भाषा नहीं अभिव्यक्ति जरूरी है क्योंकि भाषा तो सिर्फ माध्यम है अपने विचारों का आदान–प्रदान करने का। फिर भाषा को लेकर जो बहस चल रही थी वो स्वतः ही खत्म हो गयी।

सच है कि संवेदना और दर्द की भाषा एक ही होती है। वह न तो बांग्ला में होती है और न उर्दू में होती है, न हिंदी में, न अंग्रेजी में। इसलिए भाषा और संवेदना को उपेक्षित नहीं करना चाहिए। हम अपने उद्‌गारों को अपनी ही भाषा में सर्वोत्तम तरीके से प्रकट कर सकते हैं। इसलिए एक–दूसरे की भाषा और भावनाओं को उचित सम्मान देना चाहिए। फिर चाहें अभिव्यक्ति का माध्यम हम कैसा भी चुनें। बस ध्येय ये होना चाहिए कि अपने विचारों और पीड़ा को सफलतापूर्वक हम अभिव्यक्त कर सकें।

वर्तिका अवस्थी,
प्रधानध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय देवामई,
विकास क्षेत्र एवं जनपद मैनपुरी।

सद्विचार

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

शिक्षण संवाद

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक महान चिंतक थे वे संघटन में विश्वास करते थे वे भारत को सिर्फ जमीन का टुकड़ा ही बल्कि जीता जागता एक महान राष्ट्र मानते थे।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की लालसा हर मनुष्य में जन्मजात होती है और समग्र रूप में इनकी संतुष्टि भारतीय संस्कृति का सार है।

एक देश लोगों का समूह है जो एक लक्ष्य, एक आदर्श, एक मिशन के साथ जीते हैं और इस धरती के टुकड़े को मातृभूमि के रूप में देखते हैं। यदि आदर्श या मातृभूमि इन दोनों में से कोई एक भी नहीं है तो इस देश का अस्तित्व नहीं है।

यदि समाज का हर व्यक्ति शिक्षित होगा तभी वह समाज के प्रति दायित्वों को पूरा करने में समर्थ होगा।

एक अच्छे को शिक्षित करना वास्तव में समाज के हित में है।

शिक्षा एक निवेश है, आगे चलकर शिक्षित व्यक्ति समाज की सेवा करेगा।

रिलिजन शब्द का अभिप्राय पंथ या सम्प्रदाय से होता है इसका अर्थ धर्म तो कतई नहीं हो सकता है।

सिद्धान्तहीन अवसरवादी लोग ही देश की राजनीति को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाते हैं।

शक्ति हमारे गलत व्यवहार में नही बल्कि सही कार्रवाई में समाहित होती है।

स्वतंत्रता तभी सार्थक होती है जब वो हमारी संस्कृति की अभिव्यक्ति का साधन बनती है।

नैतिकता के सिद्धांत किसी व्यक्ति द्वारा बनाये नहीं जाते हैं बल्कि खोजे जाते हैं।

अपने राष्ट्र की पहचान को भुलाना भारत की मूलभूत समस्याओं का प्रमुख कारण है।

भावना शुक्ला
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय किदरापुर
फर्रुखाबाद

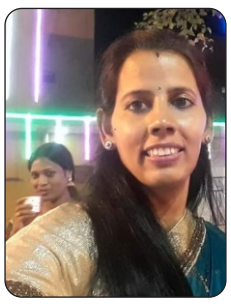

निल बटे सन्नाटा

निल बटे सन्नाटा नाम की फिल्म भारत में तो सराही ही गयी। साथ ही साथ विदेशों में भी इसकी काफी तारीफ हुई। यह फिल्म एक माँ, उसकी बेटी, बेटी के स्कूल और पढ़ाई के बारे में है। इस फिल्म में दिखाया गया है कि अप्पू नाम की एक लड़की जो पढ़ने में कमजोर है कैसे भी कक्षा–1 से कक्षा–10 तक पहुँच गयी है। लेकिन उसकी गणित बहुत ही कमजोर है। उसकी माँ चन्दा सदैव इस बात के लिए परेशान रहती है कि अप्पू को अच्छी से अच्छी शिक्षा कैसे मिले। चन्दा एक काम वाली बाई है और अप्पू को लगता है कि वह कितना भी पढ़ ले पर उसे अंत में बनना कामवाली बाई ही है। इसलिए वह पढ़ाई में रुचि नहीं रखती। चन्दा को यह बात अच्छी नहीं लगती। वो अप्पू को बहुत समझाती है। जब अप्पू नहीं समझती तो उसकी माँ उसी विद्यालय में कक्षा 10 में एडमिशन ले लेती है जिसमें अप्पू पढ़ती है। अप्पू इस बात को बिल्कुल पसंद नहीं करती है।

चंदा ये शर्त रखती है कि अगर अप्पू अच्छे नम्बर लाएगी तो वो स्कूल नहीं जाएगी। अप्पू अच्छे नंबर ले आती है उसके बाद यह कहती है मैं अच्छे नम्बर इसलिए नहीं लायी क्योंकि मुझे पढ़ना है बल्कि इसलिए लायी हूँ ताकि आप स्कूल न आओ। अप्पू और चंदा के विचारों के मतभेद चलते रहते हैं।

इस बीच चंदा की मुलाकात एक भले आईएएस से होती है जिससे चंदा आईएएस कैसे बना जाता है इस बारे में पूछती है। अनेक उतार–चढ़ाव के बाद फिल्म उस मोड़ पर खत्म होती है जब अप्पू एक आईएएस बन जाती है।

एक काम वाले की लड़की के आईएएस बनने के बारे में यह बहुत ही सुंदर फिल्म है। इस फिल्म को परिषदीय विद्यालय के बच्चों को अवश्य दिखाना चाहिए ताकि वो जानें कि कैसे उनके माँ–बाप मेहनत करते हैं और अगर बच्चे पढ़ें तो कहाँ से कहाँ पहुँच सकते हैं।

बच्चों का कोना

पुष्प के भाग

पुष्प पौधे का भाग सुन्दर
रंग आकर्षक इसके अंदर।
फूल की खुशबू निराली
तितली भी होती मतवाली।
पुष्प के कई भाग होते
अलग–अलग इसके काम हैं होते।
सबसे बाहर बाह्यदल
इनको कहते सेपल्स।
ये करते फूल की रक्षा
काम हैं जिनका सबसे अच्छा।
रंगीन पंखुड़ी होती दल
इंग्लिश में कहलाती पेटल्स।
यही भाग होता आकर्षक
भौरें खिंचते जैसे चुम्बक।
नर भाग होता पुंकेसर
मादा कहलाता स्त्रीकेसर।

रचयिता
गीता यादव,
प्रधानाध्यपिका,
प्राथमिक विद्यालय मुरारपुर,
विकास खण्ड–देवमई,
जनपद–फतेहपुर।

दो का पहाड़ा

एक मुर्गी ने दिए 2 अंडे।
उसने सेया 4 सन्डे।।
6 दिनों में चूजे भागे।
8 किमी गाँव में आगे।।
10 घण्टे मुर्गी को छकाया।
12 सड़कें उसे घुमाया।।
14 लोग गाँव से आये।
16 जाल साथ मे लाये।।
18 दाने फिर बिखराये।।
20 मिनट में चूजे पकड़े।
अकड़म, वकड़म दही के तड़के।।

रचना
सुहानी गौतम
कक्षा–6
पू0 मा0 वि0 चित्रवार
जनपद–चित्रकूट

तीन का पहाड़ा

एक राजा के रानी तीन।
पुरखों के 6 महल प्राचीन।।
9 खम्बे का एक था द्वार।
12 रक्खे चौकीदार।।
15 घण्टे करते काम।
18 रुपये मिलते थे दाम।
21 दिन में राजा आते।
24 तरह के गहने लाते।
27 देशों की यात्रा।
30 को राजा खुशी मनाता।।

रचना
सुष्मिता द्विवेदी
कक्षा–6
पू0 मा0 वि0 चित्रवार
जनपद–चित्रकूट

गौरी की इंसानियत

—पुष्पेन्द्र कुमार गोस्वामी,

रोज की तरह ममता ने गौरी को नाश्ता परोसा और जैसे ही दुबारा किचन की ओर मुड़ी गौरी ने चुपचाप रोटी उठाकर जेब मे रख ली..
गौरी अभी 5 साल की है उसे लगा माँ रोज की तरह अंजान हैं तुरंत बस्ता उठाकर स्कूल भागी जहाँ पहुँची तो प्रार्थना शुरू हो चुकी थी।
साथी सहेलियाँ उसकी जेब से निकलती रोटी देखकर हँसने लगतीं मगर इनसे बेखबर ध्यान में न जाने क्या दुआएँ माँगती..
कक्षा में पढ़ती मगर रोटी नहीं खाती और स्कूल से छुट्टी होकर घर को जाती गौरी एक झोपड़ी के आगे रूकती जहाँ पहले से एक मासूम भूखा बच्चा रोज की तरह उसका इंतजार करता हुआ खड़ा है।
गौरी रोटी उसे देख–देख मुस्कुराते हुए आगे बढ़ जाती है। बच्चा और उसकी माँ उसे आशीर्वाद देते हुए मुस्कुराते हैं।
मगर गौरी इस बात से अंजान गौरी थी कि आज उसके पिता उसका सुबह से पीछा कर रहे थे ....
क्योंकि पत्नी ममता ने उन्हें कहा –सुनिए लगता है गौरी के पेट में कीड़े हो गये हैं।
रोज चुपचाप से रोटी चुराकर ले जाती है स्कूल।
पहले तो पिता नही माने बच्ची है कहकर चुपचाप देखते रहे। मगर सिलसिला रोज का होता देखकर उन्होंने पता करने का फैसला लिया।
पता चला उस लड़के के पिता पिछले दिनों एक दुर्घटना में खत्म हो गए।
उस गरीब परिवार का बच्चा भूख से रोता हुआ मिलता ये देखकर नन्हीं सी गौरी ने उसकी भूख को मिटाने की बस एक कोशिश की।
उसे पता था कोई दूसरे तरीके से वो बच्चे की मदद नहीं कर सकती।
क्योंकि उसका परिवार भी गरीब ही था मगर दिल तो अमीर था।
बस एक यही तरीका सूझा उसे भूखे बच्चे की भूख मिटाने का..
घर पहुँचे पति से जब ममता ने पूछा –क्या गौरी के पेट मे कीड़े हैं
पता चला।
जबाब में पति बोला – कीड़े ...हाँ कीड़े तो हैं मगर पेट में नही इंसान की गरीबी में
मगर आज हमारी बेटी ने सचमुच साबित कर दिया छोटी सी मगर प्यारी सी सोच सबके पास होनी चाहिए और पूरा किस्सा सुना दिया।
दोनों ने बेटी गौरी को सीने से लगा लिया और ढेरों आशीर्वाद दिये।

पुष्पेन्द्र कुमार गोस्वामी,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अजीजपुर,
विकास खण्ड–ऊन,
जिला–शामली।

शीर्षासन

पुरस्कार प्रलाप

–प्रान्जल सक्सेना

शिक्षण संवाद

पुरस्कार प्राप्त एक मजबूत प्रक्रिया है। प्रायः प्राचीन चीजें ही मजबूत होती हैं आजकल के जमाने में तो यूज एंड थ्रो चीजें आती हैं। लेकिन पुरस्कार प्रलाप इतनी मजबूत प्रक्रिया है, इतनी मजबूत प्रक्रिया है कि उससे लगता है कि कहीं ऐसा तो नहीं की ये सृष्टि के आरंभ से भी पुरानी हो। ये उस समय बन चुकी हो जब ब्रह्मांड की उत्पत्ति भी नहीं हुई थी। पुरस्कार प्रलाप का जन्म पुरस्कार की प्रक्रिया से पहले ही हो जाता है। प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित की उसी समय से प्रलाप आरंभ हो जाते हैं–अरे! भैया, पुरस्कार तो पहुँच वालों को ही मिलेगा। वैसे आजकल नारियाँ, पुरुषों से किसी कार्य में पीछे नहीं हैं इसलिए ये भी सुनने में आने लगा है कि अरे! बहना पुरस्कार तो पहुँच वालों को ही मिलेगा। लेकिन कुल मिलाकर कहा जरूर जाता है और जैसे ही पुरस्कार वितरण हो जाता है वैसे ही ये प्रलाप अपने यौवन पर आ जाता है।

आजकल सोशल मीडिया का जमाना है जो बोलना होता है वह भी बोला जाता है जो नहीं बोलना होता है वह भी बोला जाता है। यहाँ तक कि जब पता हो कि बोलकर कोई फायदा नहीं है तब भी बोल दिया जाता है। पुरस्कार बँटते ही व्हाट्सएप समूह का निर्माण हो जाता है जिसमें चर्चा का एकमात्र बिन्दु यही होता है कि आखिर दूसरे को पुरस्कार मिला क्यों? थकान होने तक इस पर चर्चा होती रहती है। जब एहसास होने लगता है कि इस चर्चा का कोई भी अंत नहीं है तब प्रलापी कहने लगते हैं कि पुरस्कारों में कुछ धरा नहीं है। पुरस्कार किसी को भी मिला हो लेकिन कार्य हमारा ही श्रेष्ठ है। आत्मविश्वास की एक ऐसी धारा बहती है जहाँ पर व्यक्ति आत्मसंतुष्टि की पुष्टि करता रहता है। पुरस्कार पाने वालों की कमियों को अपनी जीभ की कँटीली क्षमता से उभार दिया जाता है। यह तय है, यह तय है कि पुरस्कारों के प्रति यह प्रलाप अनंत काल तक यूँ ही चलता रहेगा। सॉरी, सॉरी, सॉरी यूँ ही नहीं चलता रहेगा। इसका दिन–प्रतिदिन परिष्करण होता रहेगा। एक ऐसा भी समय आएगा जब कलयुग का अंत हो जाएगा लेकिन उसके बाद भी अगले सतयुग में कुछ बचेगा तो वो होगा पुरस्कार प्रलाप।

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

https://shikshansamvad.blogspot.com/2018/12/blog-post_75.html

अनमोल रत्न

शिक्षण संवाद

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा की अनमोल रत्न बहन नसरीन बी जी जनपद– रामपुर से करा रहे हैं। जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच और विद्यालय के प्रति समर्पित व्यवहार कुशलता और अनुशासन से विद्यालय को 37 बच्चों से बढ़ाते हुए आज 223 बच्चों तक पहुँचा कर समाज के बीच बेसिक शिक्षा और विद्यालय दोनों को विश्वास का प्रतीक बना दिया। जो हम जैसे हजारों शिक्षकों के लिए गर्व और गौरव के साथ प्रेरक और अनुकरणीय हैं। मिशन परिवार की ओर से समस्त विद्यालय परिवार को सतत शिखर की ओर गतिमान रहने के लिए कोटि–कोटि शुभकामनाएं।

आइये देखते हैं आपके द्वारा किए गये प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों को:–

नसरीन बी (प्रभारी अध्यापिका)
प्राथमिक विद्यालय हजरतपुर
विकासखंड–सैदनगर, जिला–रामपुर

15 जनवरी 2014 को मेरी प्रथम नियुक्ति प्राथमिक विद्यालय रतनपुरा शुमाली, विकासखंड–सैदनगर में हुई। सितम्बर माह 2014 में मुझको निर्माणाधीन प्राथमिक विद्यालय हजरतपुर संचालन करने हेतु मेरे कार्य से खुश होकर विभाग द्वारा इस आशय से भेजा गया कि मैं नवीन निर्माणाधीन विद्यालय का संचालन मेहनत से करुँगी।
नवीन विद्यालय के संचालन में सर्वप्रथम आने वाली समस्या थी कि न तो पेड़ था और न ही बच्चों को बैठाने के लिए कोई जगह। बस्ती में घूम–घूम कर मुश्किल से घर–घर जाकर माता–पिता को समझाने के बाद में 37 बच्चों का नामांकन विद्यालय में कराने में कामयाब हुई। जिनको निर्माणाधीन विद्यालय में बैठाकर शिक्षण कार्य आरम्भ किया। बस्ती में ही दो अन्य प्राइवेट विद्यालय संचालित थे लेकिन बिना घबराये बच्चों को अक्षर–ज्ञान एवम पहाड़े याद कराये। हर हफ्ते बच्चों की रिपोर्ट उनके माता–पिता में शेयर करते थे। उनका विश्वास जीता मात्र कुछ माह के उपरान्त ही वे बच्चे अपने मौहल्ले के उन बच्चों से आगे निकल गये जो बच्चे प्राइवेट स्कूल में पढ़ते थे।
सत्र 2015–16 में विद्यालय का नामांकन बढ़कर 94 हो गया। दो प्राईवेट स्चूलों में से एक विद्यालय बंद हो गया। अब हमारे विद्यालय का भवन भी बन कर तैयार हो गया था। अब मुझको गाँव के सौ प्रतिशत बच्चों का नामांकन प्राइवेट छोड़ अपने विद्यालय में करवाना था। इसीलिए मैंने बच्चों को खेल का सारा सामान दिलवाया और टी०एल०एम० खरीदा तथा साथ ही कक्षा में श्वेतबोर्ड लगवाये। विद्यालय में क्यारी बनवाई एवम उनमें रंग–बिरंगे फूलों वाले पौधे लगवाये । विद्यालय के बच्चों को अपने खर्च से टाई–बेल्ट, परिचय–पत्र और स्वेटर आदि बांटे विद्यालय को वर्ष–2016 में श्रेष्ठ विद्यालय का खिताब भी मिला।
सत्र 2016–17 में विद्यालय का नामांकन बढ़कर 127 हो गया और दूसरा प्राइवेट स्कूल भी बंद हो गया। 15 अगस्त–2016 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रभात फेरी प्रतियोगिता में विद्यालय को प्रथम स्थान मिला। तत्कालीन नगर विकासमंत्री माननीय श्री आजम खां जी और ज़िला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री श्यामकिशोर तिवारी जी द्वारा सम्मानित किया गया। इसी वर्ष बच्चों ने जिले से लेकर मंडल तक की खेल–कूद प्रतियोगिता में विद्यालय का नाम रोशन किया।
अब हमारे विद्यालय में बच्चों का नामांकन 223 है। बच्चों को लगन और अन्य स्टाफ के सहयोग से हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस, गाँधी जयंती और गणतंत्र दिवस में बच्चे प्रभात –फेरी में विद्यालय का नाम रोशन कर रहे है। खेल–कूद और विभिन्न प्रतियोगिता में विद्यालय का नाम ब्लॉक, जिला, मंडल से लेकर प्रदेश तक रोशन कर रहे है।

विद्यालय द्वारा किए जाने वाले अन्य कार्य –
1.आउट गोइंग पास :– विद्यालय द्वारा नवाचार के माध्यम से एक क्लास का एक ही बच्चा बाहर जा सकता है वो भी पास लेकर। कक्षा–1 से कक्षा–5 तक के केवल 5 बच्चे ही एक समय में क्लास–रूम से बाहर रह सकते है।
2.विद्यालय द्वारा सभी नामांकित बच्चों के माता–पिता का मोबाइल नंबर अंकित किए गये है ताकि बच्चों के विद्यालय न आने पर या आवश्यक कार्य होने पर उनसे संपर्क किया जा सके।
3.माह में अनिवार्य रूप से एक बार पी०टी०एम० का आयोजन ताकि बच्चों की गतिविधियों से उनको परिचित किया जा सके।
4.बच्चों के लिए बाल–सभा का आयोजन।
5. विद्यालय द्वारा अपने खर्चे पर एक पुस्तकालय भी बनाया गया है।
6. मतदान प्रक्रिया के माध्यम से हेड बॉय और हेड गर्ल का चुनाव।
7. प्रत्येक माह बच्चों के जन्मदिन उत्सव का आयोजन।
विद्यालय और शिक्षिका की उपलब्धि:
1. 5 सितम्बर 2016 को रामपुर में प्रकाशित पत्रिका "कोशिश ... बदलाव की'' प्रथम अंक में विद्यालय को स्थान मिला। तत्कालीन जिलाधिकारी श्री अमित किशोर और जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री श्यामकिशोर तिवारी जी द्वारा सम्मानित किया गया।
2. वर्ष–2017 में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री सर्वदानन्द जी द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक से सम्मानित किया गया।
3. 4 सितम्बर–2018 को दैनिक जागरण मुरादाबाद मंडल के मुख्य संपादक द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक से सम्मानित किया गया।
4. 5 सितम्बर–2018 को शिक्षक दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी श्री महेन्द्र बहादुर सिंह और जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्रीमती ऐश्वर्या लक्ष्मी जी द्वारा सम्मानित किया गया।
आप सभी से अपने शिक्षण सफर को साझा करते हुए बस यही विचार आते है
लाख मुश्किल हो राहें, उन्हें आसान बना लीजिये।
एक प्यारी से मुस्कान से, इस जहाँ को सजा लीजिये।।
ये जो फूल (बच्चे) हैं, हमारी बगिया (विद्यालय) के।
इन फूलों की खुशबू को, जग में फैला दीजिये।।

साभार :
दीपक पुंडीर (एडमिन)
मिशन शिक्षण संवाद रामपुर

नोटः– आप अपने मिशन परिवार में शामिल होने, आदर्श विद्यालय का विवरण भेजने तथा सहयोग व सुझाव को अपने जनपद सहयोगियों को अथवा मिशन शिक्षण संवाद के वाट्सअप नम्बर–9458278429 और ई–मेल shikshansamvad@gmail.com पर भेज सकते हैं।
निवेदकः विमल कुमार
24–12– 2018

माह का मिशन

रमन को नमन
(28 फरवरी : विज्ञान दिवस विशेष)

वर्तमान युग को यदि 'विज्ञान का युग' कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज विज्ञान मनुष्य जीवन के प्रत्येक पहलू में समाहित होकर उसे संकलित कर रहा है। आज के समय में विज्ञानरहित जीवन की तो कल्पना भी नहीं कि जा सकती। विज्ञान द्वारा मनुष्य का सम्पूर्ण दैनिक जीवन–क्रम रूपांतरित हो गया है। भारतीय समाज से रूढ़िवादिता तथा अंधविश्वास को कम करने में विज्ञान का विशेष महत्व है।

मानव कल्याण के लिये विज्ञान के क्षेत्र में सभी गतिविधियों, प्रयासों व उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिये, विज्ञान के विकास के सभी मुद्दों पर चर्चा करने तथा विद्यार्थियों व भारतीय नागरिकों के दैनिक जीवन में वैज्ञानिक अनुप्रयोगों के महत्व को बताने के लिये तथा इस सन्देश को व्यापक तौर पर फैलाने के लिये हर वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है।

भारत मे 28 फरवरी 1928 एक महान दिवस था जब प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री चन्द्रशेखर वेंकटरमन के द्वारा भारतीय विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण आविष्कार हुआ था। वे एक तमिल ब्राह्मण थे और विज्ञान के क्षेत्र में ऐसा आविष्कार करने वाले प्रथम भारतीय थे। सर सी वी रमन ने सन 1928 में 28 फरवरी को कोलकाता में रमन प्रभाव की खोज की थी। सर रमन की खोज के लिये उन्हें सन 1930 में नोबल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

रमन प्रभाव में एकल तरंग दैर्ध्य (मोनोक्रोमेटिक) किरणें जब किसी पारदर्शक माध्यम ठोस, द्रव या गैस से गुजरती है तब इसकी छितराई किरणों का अध्ययन करने पर पता चला कि मूल प्रकाश की किरणों के अलावा स्थिर अंतर पर बहुत कमजोर तीव्रता की किरणें भी उपस्थित होती हैं। इन्हीं किरणों को रमन किरणें भी कहते हैं।

भारत मे प्रतिवर्ष 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (नेशनल साइंस डे) मनाया जाता है, क्योंकि इसी दिवस पर रमन प्रभाव हेतु सर सी वी रमन को नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को विज्ञान के प्रति आकर्षित करना है, साथ ही साथ आम जनता को विज्ञान की उपलब्धियों हेतु जागरूक बनाना है।

विज्ञान दिवस भारत के मुख्य विज्ञान उत्सवों में से एक है। शिक्षक विद्यालयों में विज्ञान दिवस पर विज्ञान फिल्मों की प्रदर्शनी, भाषण प्रतियोगिता, निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, विज्ञान मॉडल प्रदर्शनी, शोध प्रदर्शनी, विज्ञान प्रश्नोत्तरी, संगोष्ठी, विज्ञान के महत्व तथा विज्ञान के प्रयोग से अंधविश्वास के समाप्त होने पर लघु नाटिका, विज्ञान कविताएं तथा प्रोजेक्ट कार्यों को करवाकर विज्ञान दिवस का सफल आयोजन करा सकते हैं। विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार द्वारा विज्ञान दिवस 2019 का थीम है–

Science For the People and the people for science

श्वेता शुक्ला,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय लवल,
विकास खण्ड–मोहनलालगंज,
जनपद–लखनऊ।

अनमोल बाल रत्न

हम किसी से कम नहीं

शिक्षण संवाद

गोरखपुर महोत्सव में हमारे परिषदीय बच्चे प्रतिभा संसाधनों की मोहताज नहीं होती और इसे साबित कर दिखाया है हमारे परिषदीय बच्चों ने। गोरखपुर महोत्सव 2019 में इस बार हमारे परिषदीय बच्चों ने हर कार्यक्रम और प्रतिस्पर्धा में प्रतिभाग करके हम शिक्षकों के मान सम्मान को बढ़ाया है और साथ ही समाज को एक संदेश दिया है कि परिषदीय विद्यालय, उनमें कार्यरत शिक्षक और वहाँ पढ़ने वाले बच्चे किसी भी क्षेत्र में किसी से कम नहीं हैं।

माननीय जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री भूपेंद्र नारायण सिंह जी के नेतृत्व में जहाँ एक तरफ बाल फिल्म महोत्सव में 40 से अधिक परिषदीय विद्यालयों के साढ़े चार हजार से अधिक बच्चों ने हल्का, बुधिया, निल बट्टे सन्नाटा जैसी मनोरंजक फिल्मों को पहली बार बड़े पर्दे पर देखा वहीं दूसरी तरफ पहली बार परिषदीय बच्चों ने इतने बड़े मंच पर समूह नृत्य, फैंसी ड्रेस, निबंध, शतरंज, पी.टी., वाद विवाद, सामान्य ज्ञान आदि प्रतियोगिताओं में ना केवल दमदार प्रस्तुति दिखाई बल्कि महोत्सव में उपस्थित सामान्य जनों को अपनी प्रतिभा के बल पर तालियाँ बजाने को मजबूर कर दिया। महोत्सव में हमारे परिषदीय बच्चों के लिए कहे गए शब्द "जहाँ अभाव है उसी का प्रभाव है" ने बच्चों के साथ ही उनके मेहनती शिक्षकों को भी सकारात्मक ऊर्जा से भर दिया।

फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों ने शानदार प्रदर्शन किया। किसी ने बेटी बचाओ का सुंदर चित्रण किया तो वही कोई बच्चा शिकारी के किरदार में दिखा। कुछ बच्चों ने धार्मिक किरदारों के रूप में भी प्रस्तुति दी। समूह नृत्य में बच्चों की प्रतिभा ने वहाँ उपस्थित जनसमूह को भी थिरकने पर विवश कर दिया।

योग प्रदर्शन में विभिन्न विद्यालयों के बच्चों के साथ लगभग 235 परिषदीय बच्चों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और अपने शानदार प्रदर्शन पर वाहवाही लूटी।

बाल फिल्मोत्सव के 3 घंटे के शो के बाद दूरदराज ग्रामीण एवं कछार क्षेत्रों से आए हुए बच्चों ने गोरखपुर के महत्वपूर्ण स्थानों– गोरक्षनाथ मंदिर, नौका विहार, विंध्यवासिनी पार्क, नक्षत्रशाला, बौद्ध संग्रहालय आदि का

भ्रमण किया और गोरखपुर महोत्सव के विभिन्न कार्यक्रमों का भी आनंद लिया।

विज्ञान मेले में हमारे परिषदीय बच्चे किसी प्राइवेट विद्यालयों के बच्चों से कमतर नहीं थे। गैस टार्च मॉडल, तोप का वर्किंग मॉडल, टेबल फैन, घड़ी आदि वेस्ट मटेरियल से बच्चों ने बनाए ही थे साथ ही साथ डी.एन.ए. मॉडल, जेसीबी मशीन वर्किंग मॉडल, उत्सर्जन तंत्र, रेन वाटर हार्वेस्टिंग मॉडल, अपशिष्ट पदार्थ निस्तारण मॉडल आदि भी बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए थे। कार्बाइड के प्रयोग से तोप के वर्किंग मॉडल एवं गैस टार्च की प्रस्तुति अत्यंत सराहनीय रही।

वास्तव में विभिन्न प्रतियोगिताओं में बच्चों ने पूर्ण आत्मविश्वास और समर्पण से अपनी प्रस्तुति द्वारा सभी को चकित तो कर दिया परंतु देखा जाए तो इन मिट्टी के बर्तन रूपी बच्चों को एक खूबसूरत आकार देने का प्रयास उनके कुम्हार जैसे शिक्षकों के कठोर परिश्रम और लगन ने किया है। आशा है कि अगला गोरखपुर महोत्सव हमारे परिषदीय बच्चों के लिए ढेर सारी खुशियाँ और अवसर लेकर आएगा।

मृदुला वैश्य
मिशन शिक्षण संवाद टीम गोरखपुर

बात शिक्षिकाओं की

मेरा अनुभव एवं संदेश

कमलेश चौहान,
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय सलेमपुर,
विकास खण्ड–फरह,
जनपद–मथुरा।

मैं किसान परिवार में पली–बढ़ी मेरा गाँव अत्यंत पिछड़ा और दूरस्थ था ।जहाँ पर बालिकाओं की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता था। मेरे परिवार वालों ने पढ़ाई के प्रति मेरे जुनून को देखते हुए विषम परिस्थितियों में भी मुझे पढ़ाया। उस समय मुझे लगता था कि मेरे बराबर की जो अनपढ़ बालिकाएं हैं काश! वो भी पढ़तीं तो कितना अच्छा होता, मुझे समझ में नहीं आता था कि मैं उनकी किस तरह से पढ़ाई में मदद कर सकती हूँ? मैंने बहुत कम उम्र में ही सिलाई करना सीख लिया था बस मुझे एक उपाय सूझा कि अपने स्कूल के समय के अलावा मैं उनको सिलाई– सिखाने के बहाने उनको अपने पास बुलाकर उनकी पढ़ाई में मदद कर सकती हूँ ।

इसके लिए उनके अभिभावक तैयार हो गए बस क्या था। मुझे तो जैसे पंख मिल गए हों। अब मैं स्कूल समय के बाद उन्हें अपने घर पर बुलाकर सिलाई के साथ–साथ पुरानी किताबें– कॉपी आदि से उनको पढ़ाना भी सिखाती। अब मेरा घर जैसे पाठशाला बन गया हो यह देखकर मुझे बड़ी खुशी होती थी। क्योंकि मेरे बराबर की लड़कियाँ भी पढ़ना–लिखना सीख रही हैं। उनको भी पढ़ने की बड़ी ही लगन थी ये सिलसिला चल ही रहा था कि हमारे गाँव के प्राथमिक विद्यालय में एक नये प्रधानाध्यापक जी आ गए।जब उन्हें यह पता चला कि मैं गाँव की कुछ अनपढ़ बालिकाओं को पढ़ाती हूँ तो वो मुझसे मिलने आए और उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारी मदद करूँगा। इस तरह उन्होंने मेरा नाम साक्षरता मिशन में शिक्षिका के रूप में लिखवा दिया। अब मेरा केन्द्र और अच्छी तरह से चलने लगा।

बचपन से मेरा सपना डॉक्टर बनने का था। लेकिन मेरी तकदीर में कुछ और ही लिखा था। मेरे अभिभावकों ने चयन होने के बाद भी मुझे नहीं जाने दिया। सोचते थे कि कोई क्या कहेगा? बच्ची को कहाँ भेज दिया है? मुझे गाँव के प्रधानाध्यापक जी ने समझाया कि तुम एक अच्छी शिक्षिका बन सकती हो बीटीसी कर लो। फिर मैंने उनकी बात पर बहुत विचार कर निर्णय लिया कि क्यों न मैं अपनी रूचि के अनुसार ही शिक्षा देने का काम करूँ जिससे अनपढ़, गरीब पिछड़े बालक–बालिकाओं को शिक्षित बना सकूँ। मैंने अपने केन्द्र की 40 अनपढ़ बालिकाओं को कक्षा 5 पास साक्षरता के माध्यम से करायी। सन् 1993–94 में कई बार ब्लाक एवं जनपद स्तर पर सम्मानित किया गया इसी बीच मेरा विवाह हो गया। जून 1994 में मुझे साक्षर बालिकाओं के साथ आगरा सूरसदन में माननीय श्री मोतीलाल बोहरा जी द्वारा सम्मानित किया गया।

अब शिक्षिका बनने की लगन कुछ और ज्यादा बढ़ गयी। मैंने अपने गृहस्थ जीवन को कभी भी बाधक नहीं बनने दिया। मेरे पति ने मुझे बहुत सहयोग प्रदान किया। बीटीसी में नम्बर आ गया उस प्रमाण पत्र के मुझे साक्षात्कार के 10 अंक भी मिले। अब मेरा नया सफर प्रारंभ हो गया। मैं अपने 8 माह के बेटे के साथ विषम परिस्थितियों में बीटीसी कर सन् 1999 में बेसिक शिक्षा विभाग में अध्यापिका बनी। मेरा शिक्षा देने का सपना पूरा हो गया। मेरी उड़ान तो और ऊँची थी, ग्रामीण क्षेत्र के बालक बालिकाओं को एक अच्छे ढंग से शिक्षा देने की। समय चलता गया अब मैंने एक अच्छे शिक्षक के साथ–साथ मास्टर ट्रेनर की भूमिका निभाई जिससे मेरे जैसे अन्य शिक्षक शिक्षिकाएँ भी बच्चों को बेहतर शिक्षा देने के लिए तैयार हो सकें। मुझे कई बार मेरे साथी शिक्षकों से सुनना पड़ता था कि तुम इतना क्यों करती हो? मैं किसी की भी परवाह किए बिना आगे बढ़ती रही। मेरा प्यार बच्चों के लिए उनकी पसंद के अनुसार शिक्षा देना।

खेल और गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा देना। मैं जिस भी विद्यालय में रही वहाँ पर छात्र संख्या बढ़ जाती थी। वो मेरा उनके प्रति प्यार ही था जो उन्हें स्कूल में खींचकर ले आता था। विद्यालय समय के अलावा भी मैं गाँव एवं पास–पड़ोस के बालक–बालिकाओं की शिक्षा में मदद करना मेरा ध्येय रहता है।

मेरा अनुभव एवं संदेश ——— जो हम बच्चों को देते हैं वो हमें दुगुना होकर मिलता है। बच्चों के साथ निश्छल एवं निश्वार्थ प्रेम ही हमें एक दूसरे से जोड़े रहता है। बच्चों के साथ हम बच्चे बन जाएँ तो उनको शिक्षा देना और भी आसान हो जाता है, अगर बच्चे खुश होकर हमारे साथ पढ़ेंगे तो उनको शिक्षा बोझिल नहीं लगेगी। बच्चा तो एक बढ़ता हुआ पौधा है जिसे हमें उचित, खाद, पानी एवं देखभाल करने की आवश्यकता है। अगर हम ऐसा करेंगे तो वो स्वयं ही आगे बढ़ते जाएँगे।

कस्तूरबा विशेष

के जी बी वी–एक प्रकाश स्तम्भ

–किरण बाला झा

शिक्षण संवाद

हमारी भारत सरकार बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिये सदैव नयी–नयी योजनाएँ चलाती आयी है।किसी भी क्षेत्र में बालिकाएँ बालकों से पीछे न रह पायें, यही उद्देश्य लेकर अभियान चलाए जाते रहे हैं और चलते रहेंगे, किंतु बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय (के जी बी वी) भारत सरकार की एक सफल अति महत्वाकांक्षी योजना है।

विकास खण्डों में संचालित के जी बी वी विद्यालयों में अति पिछड़े, दलित, वंचित एवं निर्धन वर्ग की ऐसी बालिकाएँ अध्ययन करते हुए निवास करती हैं जिनके लिए शिक्षा पाना एक स्वप्न मात्र होता है। बाल श्रम तथा घरेलू व कृषि कार्यों में सहयोग देने वाली इन बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा में जोड़ना अति दुष्कर होता है। अभिभावकों को सहमत करना भी कठिन होता है। आरम्भ में तो बालिकाओं को यहाँ निवास करना एक दुःस्वप्न से लगता है, किंतु जैसे –जैसे विद्यालय में मिलने वाली सुविधाओं, सुरक्षा व शैक्षिक वातावरण से उनका परिचय होता है तो उनके जीवन मे परिवर्तन के एक नए युग का शुभारंभ होता है।

अपनी शिक्षिकाओं से प्रेरणा पाकर, विश्व में नये–नये कीर्तिमान रचती स्वावलंबन का अलख जगाती, शासन एवं प्रशासन का अभिन्न अंग बनी हुई बेटियों की गौरव गाथायें सुनकर इन बालिकाओं को पता लगता है कि एक ऐसा खुला आकाश भी है जहाँ वे अपने पंखों को पसारकर अपने हौसलों की उड़ान भर सकती हैं।आत्मविश्वास की चमक उनके मुखड़े के लावण्य को और साहस एवं ओज से भर देती है। जब भी किसी पुरातन छात्रा से भेंट होती है तो मन अपूर्व उल्लास से भर उठता है।

के जी बी वी से कक्षा 8 उत्तीर्ण करने के उपरांत कुछ बालिकाओं के लिये तो शिक्षा के नये मार्ग प्रतीक्षारत होते हैं तो कुछ बालिकाओं को विपरीत परिस्थितियों से जूझकर अपनी राह स्वयं बनानी पड़ती है। उच्च शिक्षा प्राप्त करती हुई बालिकाओं से मिलकर हर्ष होता है तो घर परिवार व समाज के दबाव के चलते शिक्षा अधूरी छोड़ देने वाली बालिकाओं से मिलकर अपार दुःख भी। किंतु इन दीपशिखाओं की लौ सतत झंझावातों से संघर्ष करती हुई अशिक्षा और असमानता के अंधकार को मिटाने में जी जान से जुटी हुई है और इनकी प्रेरणा बनी हुई हैं वे शिक्षिकायें जो दिन रात साथ रहकर अपने वात्सल्य से इन्हें सींच रही है।

विपरीत परिस्थितियों तथा चुनौतियों से जूझते हुए के जी बी वी लाखों दलित, वंचित, पिछड़े, ग्रामीण तथा निर्धन वर्ग की बालिकाओं के जीवन मे शिक्षा का प्रकाश बिखेर रहे हैं। यहाँ की शिक्षिकायें व अन्य शिक्षणेत्तर कर्मचारी भी निरन्तर तन, मन, धन से इस पुण्य कर्म में रत हैं।

कड़ी है धूप सरे रह गुजर सफर मुश्किल।
रास्ते में घनी उम्मीद के साये रखना।।

किरण बाला झा,
के जी बी वी,
विकास खण्ड–शाहबाद,
जनपद–रामपुर।

योगः कर्मसु कौशलम्

–रचित चौरसिया

हमारे ऋषियों मुनियों ने कर्म की कुशलता को योग कहा है। बाल वर्ग के बच्चों को भी यदि आसन, प्राणायाम, सूक्ष्म व्यायाम नियमित कराते हैं तो स्वभाविक है उनमें विभिन्न प्रकार की कुशलताओं में अभिवृद्धि होगी।

समय से जगना, समयबद्ध दैनिक चर्चा को पूर्ण करना योग का ही अंग है।

यम–नियम के अन्तर्गत जो नैतिक मूल्य हैं उनका विकास बालमन में ही शीघ्र और अच्छी रीति से विकसित किए जा सकते हैं।

यम ––अर्थात सत्य, अहिंसा ....

नियम––सोच, तप, स्वाध्याय.....

इन जीवन मूल्यों को सहजता से बच्चों को सिखाया समझाया जा सकता है।दिनचर्या में योग को जोड़ दिया जाए तो बच्चों में कौशल विकास में अपेक्षित अभिवृद्धि होगी। शारीरिक विकास के साथ व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास समुचित रीति से होगा।

बच्चों में असीमित ऊर्जा होती है उस ऊर्जा को सयंमित कर बहुमुखी विकास के पथ पर बढ़ने में योग बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

नींव जितनी दृढ़ होगी जीवन का महत्व उतना ही मजबूत और भव्य बनता है।

अतः बाल मनोविज्ञान को समझते हुए योग के माध्यम से बच्चों में सर्वांगीण विकास का लक्ष्य सहजता से पूर्ण किया जा सकता है।

आसन और प्राणायाम से अनगिनत लाभ हैं।

- योग जीवन जीने की कला सिखाता है।
- योग जीवन मूल्यों को आचरण में ढालता है।
- योग सामाजिकता के श्रेष्ठ भाव भरता है।
- योग मानवीकरण का सर्वाधिक मूल्यवान भाग है।

भारत माता की जय

करो योग ...रहो निरोग

रचित चौरसिया,
सहायक अध्यापक,
EMPS Nasrapur
ब्लॉक व जनपद–कन्नौज
उत्तर–प्रदेश

खेल–विशेष

बैडमिंटन

–गीता यादव

इस खेल की शुरुआत सर्वप्रथम 1807 ईस्वी में हुई थी इस खेल को सेना के अधिकारी इंग्लैंड में खेला करते थे। जब वे भारत में आए तो भारत में भी ये खेल लोकप्रिय हो गया। इस खेल को खेलने के नियम बनाने के लिए 1893 में बैडमिंटन एसोसिएशन की स्थापना की गई थी । जिसे अब ओलंपिक में भी 1992 से खेला जा रहा है।

खेल का मैदान

खेल के मैदान की लंबाई 44 फुट और चौड़ाई 20 फुट होती है।

इस मैदान को दो बराबर भागों में बाँटने के लिए एक नेट लगाया जाता है।

यह नेट दोनों छोर से धरातल से 5 फीट 1 इंच ऊँचा बाँधा जाता है।

नेट की मध्य से 1.98 मीटर की दूरी पर एक सफेद रंग की सर्विस लाइन होती है जहाँ से खिलाड़ी खेल को प्रारंभ करता है।

यह एक इंडोर गेम है इसमें रैकेट शटल कॉक का प्रयोग किया जाता है।

खेल के नियम

इस मैच में जब 2 खिलाड़ी एक दूसरे से मुकाबला करते हैं उन्हें सिंगल्स कहते हैं और यदि दोनों तरफ दो दो खिलाड़ी मौजूद हो तो उन्हें डबल्स कहते हैं।

जिस तरफ से पहली बार शटलकॉक को मारा जाएगा उसे सर्विसिंग साइड कहा जाएगा जबकि दूसरे को रिसीविंग साइड कहेंगे।

प्रत्येक खेल अधिकतम कुल 21 पॉइंट का होता है।

एक मैच तीन भागों में होता है यदि दोनों दलों का स्कोर 20 हो चुका हो तो खेल तब तक जारी रहता है जब तक दोनों में किसी एक को दो अतिरिक्त प्वाइंट्स की बढ़त न मिल जाए।

एक खिलाड़ी या जोड़े खिलाड़ी को जीतने के लिए 3 में से 2 मैच जीतनी होती हैं।

खिलाड़ियों को अपने कोर्ट, मैच के दूसरे खेल की शुरुआत में बदलने होते हैं।

सर्वर और रिसीवर को बिना सर्विस लाइन सर्विस कोर्ट में रहना होता है।

एक खिलाड़ी की तरफ से सर्विस करने के बाद दूसरे खिलाड़ी के कोर्ट में कॉक का पहुँचना अनिवार्य है यदि ऐसा न हुआ तो लाभ विपरीत कोर्ट के खिलाड़ी को मिलता है।

एक कॉक 530 मिलीमीटर से कम या 990 मिली मीटर से अधिक कभी नहीं उड़ती।

रैकेट का वजन 70 से 95 ग्राम के बीच होता है।

अंपायर को नेट के पास ऊँची जगह पर बैठना होता है।

प्रसिद्ध टूर्नामेंट

थॉमस कप 1947 पुरुष वर्ग प्रत्येक 3 वर्ष में।
उबेर कप 157 महिला वर्ग प्रत्येक 3 वर्ष में।
वर्ल्ड चौंपियनशिप 1977 प्रत्येक 3 वर्ष में।
ऑल इंग्लैंड चौंपियनशिप 1899 से
सबसे ज्यादा प्रसिद्ध।
प्रसिद्ध खिलाड़ी
भारतीय
पुलेला गोपीचंद
पीवी सिंधु
साइना नेहवाल
प्रकाश पादुकोण
अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी
तौफीक हिदायत इंडोनेशिया
लिंग चुंग वी चीन
गाओ लिंग चीन
साइमन संतोसो इंडोनेशिया।

खेल के लाभ
शारीरिक व्यायाम हो जाता है एकाग्रता की शक्ति बढ़ती है।
रक्त संचरण में सहायक होता है।

□□□

गीता यादव,
प्रधानाध्यपिका,
प्राथमिक विद्यालय मुरारपुर,
विकास खण्ड–देवमई,
जनपद–फतेहपुर।

फरवरी माह के महत्वपूर्ण दिवस

1 फरवरी – तटरक्षक दिवस

4 फरवरी – विश्व कैंसर दिवस

9 फरवरी – सुरक्षित इन्टरनेट दिवस

10 फरवरी – राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस

13 फरवरी – विश्व रेडियो दिवस

12 फरवरी – उत्पादकता दिवस

13 फरवरी – सरोजिनी नायडू की जयंती

14 फरवरी – पंडित दीनदयाल पुण्यतिथि

20 फरवरी – विश्व सामाजिक न्याय दिवस

21 फरवरी – अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

22 फरवरी – विश्व स्काउट (Scout) दिवस

24 फरवरी – केन्द्रीय उत्पाद शुल्क दिवस

27 फरवरी – चंद्रशेखर आजाद की शहादत

28 फरवरी – राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

28 फरवरी – ड़ा.राजेन्द्र प्रसाद पुण्यतिथि

www.starfall.com

जब मै बच्चा था तब मैने कंप्यूटर को सिर्फ देखा था, लेकिन आज की तरह बच्चों और युवाओं को इंटरनेट की व्यापक खुली दुनिया का एक्सेस नहीं था। बाद में डायल–अप आया जिसमें इंटरनेट की स्पीड काफी स्लो थी। लेकिन अब समय बदल गया है। अब घर–घर में ब्रॉडबैंड व 4 जी पहुँच चुका है और अब सभी इंटरनेट का आनंद ले सकते है।

लेकिन अब कई पैरेंट्स यह सोच रहे होंगे कि उनके बच्चे कौन सी वेबसाइट देखे। जिम्मेदार माता पिता को पता होता है, कि जब बच्चे मनोरंजन और खुद को शिक्षित करने के लिए इंटरनेट का उपयोग कर रहे होते हैं, तब उन्हे सतर्क रहना चाहिए। इसलिए वे सबसे फनी, एजूकेशनल, प्रॉडक्टिव और सुरक्षित वेब साइटों को सर्च करते है। व्यक्तिगत रूप से यह तय करना कि उनके बच्चे इंटरनेट पर क्या देखें और क्या नहीं, अंततः माता–पिता पर निर्भर है।

छुटिटयों में बच्चे घर पर रहते है, तो ऐसे समय आप उन्हे कुछ क्वालीटी वेब साइट दिखा सकते है। वे सुरक्षित, स्वतंत्र और मजेदार माहौल में नया कुछ सीख सकते हैं।

स्टारफाल एक फ्री वेबसाइट है, जिसमें बेसिक रीडिंग, मैथ, अल्फाबेट्स को सीखा जा सकता है।

मिशन–उपस्थिति

बेसिक के सरकारी विद्यालयों में पायी जाने वाली सबसे प्रमुख समस्या छात्र उपस्थिति के प्रतिशत को लेकर बनी रहती है। जहाँ प्राइवेट विद्यालयों में उपस्थिति 80% से अधिक हमेशा बनी रहती है वहीं बेसिक के विद्यालयों में यह घटकर औसतन 50 से 60% रह जाती है क्या कारण है कि बेसिक में इतनी कम उपस्थिति रहती है। साथ ही वे कौन सी राहे हैं, जिन पर चलकर छात्र उपस्थिति को 80% से अधिक पाया जा सकता है। इन समस्त तथ्यों पर विचार करने के लिए प्रदेश के विभिन्न जनपदों से ऐसे विद्यालयों के अनुभवों को साझा किया जा रहा है, जिन्होंने न स्वयं राहें बनायीं बल्कि उन राहों पर चलकर अपने विद्यालय की औसत उपस्थिति 80% से अधिक बनाए रखी। इस पर स्वयं ना कहकर उनके अनुभवों को उन्हीं के शब्दों में आपके समक्ष रखा जा रहा है।

प्राथमिक विद्यालय निमचना 2 ब्लॉक अगौता, जिला बुलंदशहर

कुल नामांकन 2012 में 35 बच्चे। उपस्थिति 50% रहती थी और स्टाफ 4 लोगो का। 2012 मे अंतर्जनपदीय तबादला लेकर यहाँ जॉइन किया। बच्चों से प्यार और दोस्तो की तरह बात करना। खेल करवाना, उनका जन्मदिन मनाना, प्रतिदिन आने वाले को स्कूल मॉनिटर बनाना, बालसभा, घर–घर जाकर सम्पर्क, उनकी वर्दी कॉन्वेंट जैसे बच्चों की तरह की, उनकी फरमाइश पर (टाई,बेल्ट,आईकार्ड)। खुद रोज टाइम से विद्यालय पहुँचना ओर साथ में बच्चों को बुलाकर ले जाना स्टार्ट किया। सभी बच्चों के अभिभावकों के फोन नंबर लिए गए। विद्यालय को आकर्षक बनाया पेंटिंग बनवाकर। खेलने के लिए बैटमिंटन, फुटबॉल, रस्सी आदि। पिछले सत्र में अकेले रहने पर भी नामांकन 85 रहा। गाँव में 2 प्राथमिक विद्यालय हैं और प्राइवेट स्कूल भी है। अकेले रहने पर भी बच्चों के माता–पिता ने हमारे विद्यालय में ही बच्चो का नामांकन कराया। आज भी केवल 3 ही स्टाफ है और बच्चों की उपस्थिति 82% रहती है हम इस विद्यालय में कार्यवाहक प्रधानाचार्य हैं 2012 से।

सीमा बधौतिया (IHM)
प्राथमिक विद्यालय निमचना 2
ब्लॉक अगौता (बुलंदशहर)

संकलनकर्ता
विनोद कुमार
भदोही

क्रमशः अगले अंक में.....

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2017-18 से पुरस्कृत विद्यालय

आदर्श प्राथमिक विद्यालय, मूड़घाट

विकास खण्ड-बस्ती सदर, जनपद-बस्ती

कक्षा 1 से 5 तक   यू-डायस कोड : 09550710002

Website : www.mpsmoorghat.com

श्रीमती अनुपमा जायसवाल

अवकाश तालिका वर्ष-2019

क्रमांक	अवकाश का नाम	दिनों की संख्या	तिथियां	दिनों के नाम
1.	गुरु गोविन्द सिंह जन्म दिवस	1	13 जनवरी	रविवार
2.	मकर संक्रान्ति	1	15 जनवरी	मंगलवार
3.	गणतंत्र दिवस	1	26 जनवरी	शनिवार (शिक्षण कार्य स्थगित)
4.	बसन्त पंचमी	1	10 फरवरी	रविवार
5.	संत रविदास जयन्ती	1	19 फरवरी	मंगलवार (शिक्षण कार्य स्थगित)
6.	महा शिवरात्रि	1	04 मार्च	सोमवार
7.	होलिका दहन	1	20 मार्च	बुधवार
8.	होली /मो0 हजरत अली का जन्म दिवस	1	21 मार्च	गुरुवार
9.	होली	1	22 मार्च	शुक्रवार
10.	राम नवमी	1	13 अप्रैल	शनिवार
11.	डा0 भीम राव अम्बेडकर जन्म दिवस	1	14 अप्रैल	रविवार (शिक्षण कार्य स्थगित)
12.	महावीर जयंती	1	17 अप्रैल	बुधवार
13.	गुड फ्राई-डे	1	19 अप्रैल	शुक्रवार
14.	बुद्ध पूर्णिमा	1	18 मई	शनिवार
15.	ईद-उल-फित्र	1	05 जून	बुधवार
16.	ईदुज्जुहा (बकरीद)	1	12 अगस्त	सोमवार
17.	स्वतंत्रता दिवस/रक्षाबंधन	1	15 अगस्त	गुरुवार (शिक्षण कार्य स्थगित)
18.	जन्माष्टमी	1	23 अगस्त	शुक्रवार
19.	मोहर्रम	1	10 सितम्बर	मंगलवार
20.	महात्मा गांधी जन्म दिवस	1	02 अक्टूबर	बुधवार (शिक्षण कार्य स्थगित)
21.	दशहरा (महाअष्टमी)	1	06 अक्टूबर	रविवार
22.	दशहरा (महानवमी)	1	07 अक्टूबर	सोमवार
23.	दशहरा (विजयदशमी)	1	08 अक्टूबर	मंगलवार
24.	महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	1	13 अक्टूबर	रविवार
25.	चेहल्लुम	1	19 अक्टूबर	शनिवार
26.	नरक चतुर्दशी	1	26 अक्टूबर	शनिवार
27.	दीपावली	1	27 अक्टूबर	रविवार
28.	गोवर्धन पूजा	1	28 अक्टूबर	सोमवार
29.	भैयादूज/चित्रगुप्त जयन्ती	1	29 अक्टूबर	मंगलवार
30.	सरदार बल्लभ भाई पटेल जयंती	1	31 अक्टूबर	गुरुवार (शिक्षण कार्य स्थगित)
31.	छठ पूजा पर्व	1	02 नवम्बर	शनिवार
32.	ईद-ए-मिलाद/बारावफात	1	10 नवम्बर	रविवार
33.	गुरुनानक जयन्ती (कार्तिक पूर्णिमा)	1	12 नवम्बर	मंगलवार
34.	क्रिसमस	1	25 दिसम्बर	बुधवार

विद्यालय समय प्रबन्धन

- नामांकन प्रारम्भ : 1 अप्रैल से 30 सितम्बर तक।
- समय अवधि : अप्रैल से सितम्बर-8 से 1 बजे तक।
- अप्रैल से मार्च 9 से 3 बजे तक।
- सत्र परीक्षा : माह अगस्त व जनवरी में ।
- अर्द्धवार्षिक परीक्षा : माह अक्टूबर में
- वार्षिक परीक्षा : मार्च माह में

हेल्पलाइन

पुलिस-100
अग्निशमन - 101
एम्बुलेंस - 108/102
चाईल्ड हेल्पलाइन- 1098
महिला हेल्पलाइन - 1090
रेलवे - 130/139
कोतवाली-9454403115
हाईवे इमरजेंसी-1083
आर.पी.एफ. इमरजेंसी-182
प्रधानाध्यापक - 9415047039

अभिभावकों से अपील

- अपने पाल्यों को नियमित व निर्धारित समय से आधे घण्टे पूर्व विद्यालय भेजें।
- छात्र-छात्राओं को निर्धारित ड्रेस व हाउस ड्रेस में ही भेजें।
- स्कूल डायरी में दिए गए निर्देशों का पालन करें।
- अपने पाल्यों में स्वच्छता की आदतों के विकास में सहयोग करें।
- प्रत्येक माह के अन्तिम शनिवार को शिक्षक अभिभावक बैठक में प्रतिभाग करें।
- माह के 5 तारीख को विद्यालय प्रबन्ध समिति सदस्य बैठक में अवश्य प्रतिभाग करें।

JANUARY 2019

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

FEBRUARY 2019

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

MARCH 2019

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

APRIL 2019

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

MAY 2019

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

JUNE 2019

S	M	T	W	T	F	S
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

JULY 2019

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

AUGUST 2019

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

SEPTEMBER 2019

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

OCTOBER 2019

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

NOVEMBER 2019

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

DECEMBER 2019

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

हमारी सुविधाएं

- प्रोजेक्टर सुविधायुक्त स्मार्ट क्लास।
- बायोमैट्रिक उपस्थिति।
- विद्यालय का हाउसवार विभाजन।
- साउण्ड सिस्टम के साथ प्रार्थना सभा।
- सी0सी0टी0वी0 निगरानी।
- बच्चों हेतु डेस्क बेंच सुविधा।
- प्रशिक्षित शिक्षक।
- कम्प्यूटर व योग शिक्षा।
- सुसज्जित पुस्तकालय व ई-लाइब्रेरी।
- नि:शुल्क युनिफार्म पाठ्यपुस्तकें, बैग, जूता-मोजा व स्वेटर।
- साप्ताहिक मीनू के अनुसार पौष्टिक मध्याह्न भोजन।
- आर्ट क्राफ्ट/म्यूजिक/ इंग्लिश स्पीकिंग सुविधा।
- नवोदय व विद्या ज्ञान कोचिंग/समरकैम्प सुविधा।
- प्रतिवर्ष विद्यालय वार्षिकोत्सव व शैक्षिक भ्रमण।
- शुद्ध पेय जल हेतु आर.ओ. व स्वच्छ शौचालय सुविधा।
- छात्र-छात्राओं की मोबाइल ऐप आधारित उपस्थिति।
- स्वच्छ व आकर्षक विद्यालय परिसर व भव्य सभागार।
- बिजली-पंखे सुविधायुक्त आकर्षक कक्षाएं।

इण्टरनेट पर विद्यालय गतिविधियां

www.mpsmoorghat.com
https://www.youtube.com/user/sarvestkumar
psmoorghat@gmail.com
आदर्श-प्राथमिक-विद्यालय-मूड़घाट-बस्ती
@mpsmoorghat
+91-9415047039

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र, प्र.अ. — राष्ट्रपति पदक प्राप्त शिक्षक
इन्द्रजीत ओझा — खण्ड शिक्षा अधिकारी-बस्ती सदर
अरुण कुमार — जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, बस्ती
रूबी सिंह — सचिव, बेसिक शिक्षा परिषद, उ.प्र.
डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह — शिक्षा निदेशक (बेसिक), उ.प्र.
डा. राज शेखर (I.A.S.) — जिलाधिकारी, बस्ती

स्वच्छ भारत — एक कदम स्वच्छता की ओर
शिक्षण संवाद
सर्व शिक्षा अभियान — सब पढ़ें सब बढ़ें

शिक्षा का अधिकार

पूर्व माध्यमिक विद्यालय कोईलरा

विकास क्षेत्र- औराई, जनपद-भदोही

JANUARY 2019

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

FEBRUARY 2019

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

MARCH 2019

S	M	T	W	T	F	S
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

APRIL 2019

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

MAY 2019

S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

JUNE 2019

S	M	T	W	T	F	S
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

JULY 2019

S	M	T	W	T	F	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

AUGUST 2019

S	M	T	W	T	F	S
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

SEPTEMBER 2019

S	M	T	W	T	F	S
29	30					
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28

OCTOBER 2019

S	M	T	W	T	F	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

NOVEMBER 2019

S	M	T	W	T	F	S
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

DECEMBER 2019

S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

2019
LIST OF HOLIDAYS

जनवरी
1 ईसाई नववर्षारम्भ
13 गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती
14 मकर संक्रांति, पोंगल
15 खिचड़ी का पुण्य पर्व
26 भारतीय गणतन्त्र दिवस

फरवरी
4 मौनी अमावस्या
10 बसन्त पंचमी
19 रविदास जयन्ती

मार्च
4 महाशिवरात्रि
20 होलिका दहन
21 होली रंगोत्सव, बसन्तोत्सव

अप्रैल
1 [illegible]
6 [illegible]
13 श्रीराम नवमी
14 अम्बेडकर जयन्ती (जैन)
19 गुड फ्राइडे
20 [illegible]

मई
1 मई दिवस, मजदूर दिवस
7 परशुराम जयन्ती
18 बुद्ध जयन्ती

जून
2 [illegible]
5 ईद, ईदुल फितर
12 गंगा दशहरा

जुलाई
4 रथ यात्रा (पुरी उड़ीसा)
16 गुरु पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण

अगस्त
3 [illegible]
12 बकरीद, ईद-उल-जुहा
15 भारतीय स्वतन्त्रता दिवस, रक्षाबन्धन
23 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
24 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

सितम्बर
10 मुहर्रम (आशूरा)
17 विश्वकर्मा पूजा
23 [illegible]
28 पितृ विसर्जनी अमावस्या
29 शारदीय नवरात्र प्रारम्भ, अग्रसेन जयन्ती

अक्टूबर
2 गाँधी जयन्ती
8 विजय दशमी, दुर्गा विसर्जन
19 [illegible]
27 दीपावली
29 भैया दूज, चित्रगुप्त पूजा

नवम्बर
10 बारावफात
12 कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानक जयन्ती
14 बाल दिवस, नेहरू जयन्ती

दिसम्बर
25 क्रिसमस डे (बड़ा दिन)
26 [illegible]

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर–9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/1180108654646 49/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6– व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7– ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8– वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात